# 1 थसलोनीकियों

## थसलोनीकी शहर के सत्संग को राजदूत पौलुस का पहला पत्र

### पुस्तक की कुछ ज़रूरी बातें

थसलोनीकी शहर आज के ग्रीस देश में स्थित है। मुक्तिदाता येशु के राजदूत पौलुस और सिलवानुस ने थोड़े ही समय में थसलोनीकी शहर में सत्संग की स्थापना कर ली थी। उस सत्संग के स्थापना का समय सन 50 सी.ई. के आस-पास था जो प्रभु येशु की मृत्यु और उनके जीवित होने के लगभग 20 साल बाद हुआ था। पौलुस और सिलवानुस थसलोनीकी शहर छोड़कर कुरिंथ शहर गए जहाँ उन्होंने थसलोनीकी सत्संगियों को ये दो पत्र लिखे। राजदूत पौलुस ने वहाँ के भक्तों को धन्यवाद दिया और उन्हें प्रेरणा दी कि वे पवित्र जीवन जीएँ और परमात्मा को हर स्थिति में खुश रखने के लिए तैयार रहें। इस पत्र में राजदूत पौलुस ने प्रभु येशु के पृथ्वी पर दुबारा आने के बारे में भी साफ-साफ लिखा है।

प्रार्थना - हे परमात्मा, थसलोनीकी शहर के सत्संगियों को यह पत्र लिखने के लिए शिष्य पौलुस को प्रेरणा देने के लिए आपका धन्यवाद। आपकी कृपा से हमारे जीवन में अद्‌भुत बदलाव हो रहे हैं और हम प्रभु येशु के लौटने पर आपकी कृपा से हमारे जीवन में अद्‌भुत बदलाव हो रहे हैं और हम प्रभु येशु के लौटने पर उनसे मिलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं

• • • ■ • • •

# 1

[1]यह पत्र पौलुस, सिलवानुस और तिमोथियस की ओर से है। हम
यह पत्र थसलोनीकी शहर के सत्संग में उन भक्तों को लिख रहे हैं, जो
पिता परमात्मा और मुक्तिदाता प्रभु येशु के हैं। परमात्मा तुमको कृपा
और शांति दें।

## गहरी आस्था का उदाहरण

[2]तुम सबके लिए हम परमात्मा को हमेशा धन्यवाद देते हैं और तुम्हें
अपनी प्रार्थनाओं में याद करते हैं। [3]जब हम तुम्हारे लिए पिता परमात्मा
से प्रार्थना करते हैं, तो हम तुम्हारी ईमानदारी, तुम्हारे प्यार से भरे
कामों और हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु के कारण सुंदर भविष्य के लिए
मज़बूत आशा के बारे में सोचते हैं। [4]भक्त भाइयो और बहनो, परमात्मा
के प्यारो, हमें पूरा भरोसा है कि परमात्मा ने तुम्हें अपना बनाया है।
[5]जब हम तुम्हें मुक्तिदाता येशु के सम्बन्ध में शुभ संदेश सुनाते थे, वे
ऐसे शब्द थे जिनका तुम्हारे जीवन पर शक्तिशाली प्रभाव पड़ा क्योंकि
पवित्र आत्मा ने तुम्हें पूरा निश्चय दिया था कि जो हम कहते हैं, वह सच
है। और जब हम तुम्हारे साथ थे, तब तुमने देखा था कि हमारा व्यवहार
कैसा था और हमने कैसे तुम्हारी सहायता की। [6]तुमने पवित्र आत्मा के
संदेश को खुशी से स्वीकार किया, भले ही इससे तुम को बहुत तकलीफ़
हुई हो। इस में तुम हमारे और हमारे प्रभु येशु के जैसे बन गये थे। [7]इस
कारण, तुम मैसेडोनिया और आखेया प्रदेशों में सभी भक्तों के लिए एक
अच्छा उदाहरण बन गए हो। [8]और तुम्हारे कारण प्रभु येशु का संदेश उन
प्रदेशों में सब जगह फैल गया है। अब परमात्मा में तुम्हारी गहरी आस्था
के बारे में सारा संसार जानता है, और हमें इसके बारे में कुछ और
कहने की ज़रूरत नहीं लगती। [9]हर जगह लोगों में इस बात की चर्चा
है कि तुमने दिल खोलकर हमारा स्वागत किया और तुम मूर्तियों की
भक्ति छोड़कर सच्चे और जीवित परमात्मा की भक्ति और सेवा करने
लगे। [10]वे यह भी बताते हैं कि तुम कैसे परमात्मा के पुत्र मुक्तिदाता
येशु के परमस्वर्ग से पृथ्वी पर आने का इंतज़ार कर रहे हो। परमात्मा ने
अपने पुत्र को मरने के बाद जीवित कर दिया और वह हमें परमात्मा के
आनेवाले न्याय और क्रोध से बचाते हैं।

# 2

## पौलुस का भक्तों के प्रति अद्‌भुत प्रेम

[1]भक्त भाइयो और बहनो, तुम स्वयं जानते हो कि तुम्हारे यहाँ हमारा
आना बेकार नहीं हुआ। [2]जैसा कि तुम जानते हो, हमें कुछ ही समय
पहले परमात्मा के मुक्ति का शुभ संदेश सुनाने के कारण फिलिपी
शहर में दुख और अपमान सहना पड़ा था। किंतु हमने बहुत विरोध होने
पर भी हमारे परमात्मा की सहायता से, बिना डरे, तुम्हें यह शुभ संदेश
सुनाया। [3]तो तुम देख सकते हो कि हम किसी छल-कपट, अशुद्ध इरादे
या चालाकी से प्रचार नहीं कर रहे थे।
[4]परमात्मा ने हम पर खुशी से भरोसा किया और हमें इस शुभ संदेश
का प्रचार करने की जिम्मेदारी सौंपी है। हम यह शुभ संदेश लोगों को
खुश करने के लिए नहीं बल्कि परमात्मा को खुश करने के लिए प्रचार
करते हैं। परमात्मा हमारे इरादों को जानते हैं। [5]जैसा कि तुम जानते हो
कि हमने तुम्हारा मन जीतने के लिए कभी चापलूसी की बातें नहीं कीं।
और परमात्मा हमारे गवाह हैं कि हम तुम्हारा पैसा पाने के लिए तुम्हारे
दोस्त होने का नाटक नहीं कर रहे थे! [6]और हमने न तो तुमसे या फिर
किसी अन्य व्यक्ति से शाबाशी पाने की कोशिश की। हालाँकि हम
मुक्तिदाता के राजदूत होने के कारण तुम से कुछ भी माँग सकते थे,
[7]लेकिन हमने आज्ञाकारी बच्चों की तरह व्यवहार किया। हमने ममता
से भरी एक माँ की तरह भी अपने बच्चों की परवरिश और देखभाल
की। [8]हम तुम्हारी बहुत परवाह करते हैं, और तुम्हारे लिए हमारे मन में
बहुत प्यार है, कि हमने केवल तुम्हें परमात्मा का शुभ संदेश ही नहीं
दिया है बल्कि हम तुम्हारे लिए अपनी जान देने को भी तैयार हैं।
[9]भक्त भाइयो और बहनो, तुम्हें याद होगा कि जब हम थसलोनीकी
शहर में थे, तब हमने परमात्मा का शुभ संदेश सुनाने और अपनी
रोज़ी रोटी कमाने में कितनी लगन से मेहनत की थी ताकि हम अपना
आर्थिक बोझ किसी पर न डालें। [10]तुम स्वयं गवाह हो और परमात्मा
भी गवाह हैं कि तुम भक्तों के बीच हमारा आचरण कितना पवित्र,
खरा और बिना किसी दाग के रहा। [11]तुम यह भी जानते हो कि हमने
तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार किया है जैसा एक पिता अपने बच्चों
के साथ करता है। [12]हमने तुमसे विनती की और प्रेरणा दी कि तुम में

से हर एक इस तरह जीवन बिताए जिससे परमात्मा का सम्मान हो। परमात्मा ने तुमको उनके साम्राज्य का हिस्सा बनने और उनके तेज में भागीदार बनने के लिए चुना है।

13हम परमात्मा को इसलिए भी हमेशा धन्यवाद देते हैं कि जब हमने तुम्हें परमात्मा का संदेश दिया तो तुमने उसे किसी व्यक्ति के द्वारा बोले हुए शब्द मात्र नहीं समझे, किंतु परमात्मा का संदेश मानकर उनको अपनाया। और अब यह संदेश तुम भक्तों के जीवन में बड़ा बदलाव ला रहा है।

14प्रिय भाइयो और बहनो, तुमने अपने ही देशवासियों के हाथों से परेशानियों का सामना किया। और तुम ने भी मुक्तिदाता येशु में आस्था रखने के कारण उसी तरह के दुखों को झेला जो यहूदिया प्रदेश में परमात्मा के सत्संगों को कट्टर यहूदी लोगों ने दिए। 15इन कट्टर यहूदी लोगों ने प्रभु येशु और अपने ही परमात्मा के प्रवक्ताओं की हत्या की और वे अब मेरे और दूसरे प्रभु येशु के राजदूतों के पीछे पड़े हैं। वे परमात्मा को दुखी करते हैं और सब लोगों के विरोधी हैं। 16वे हमें रोकने की कोशिश करते हैं कि हम दूसरे समाज के लोगों को मुक्ति का संदेश न सुनाएँ। इस प्रकार इन कट्टर यहूदी लोगों का पाप का घड़ा भरता जाता है और अब परमात्मा का क्रोध उनपर भड़क गया है।

17भक्त भाइयो और बहनो, हम तुमसे कुछ समय के लिए मन से नहीं, किंतु आँखों से दूर हो गए थे। इस कारण हमें तुम से मिलने की बड़ी इच्छा थी। 18तो हमने खासतौर पर मुझ, पौलुस ने बार-बार तुम्हारे पास आना चाहा, पर शैतान ने इसमें बाधा पहुँचाई। 19तो हमारी आशा क्या है? हमें किस चीज़ से खुशी मिलती है? प्रभु येशु के सामने न्याय के दिन परमात्मा के भक्तों के रूप में तुम्हारे वहाँ दिखने में! 20हाँ, परमात्मा के साथ तुम्हारे दिखने से हमें बहुत खुशी मिलेगी और वही हमारा इनाम होगा।

# 3

## तिमोथियस का कार्य

1-2हमें तुम्हारा हाल-चाल जानने की बहुत इच्छा थी, इसलिए हम एथेंस शहर में ही रुके रहे और हमारे भाई तिमोथियस को तुम्हारा

हाल-चाल लेने के लिए भेज दिया। वह परमात्मा के सेवक के रूप में
हमारे साथ काम करता है और मुक्तिदाता के बारे में शुभ संदेश का
प्रचार करता है। हम चाहते थे कि वह प्रभु येशु पर तुम्हारी आस्था में
तुम्हें और मजबूत करे और तुमको प्रेरणा दे, 3जिससे इन परेशानियों के
बीच तुममें से कोई आस्था से भटक न जाए। तुम इस बात को जानते
हो कि हमारे लिए इन परेशानियों से गुज़रना ज़रूरी है। 4जब हम तुम्हारे
यहाँ थे, तब हमने तुम्हें बता दिया था कि हम पर परेशानियाँ आने
वाली हैं, और जैसा तुम जानते हो, ऐसा हुआ भी। 5इसलिए, जब मुझसे
और सहन नहीं हुआ, तो मैंने तिमोथियस को यह पता लगाने के लिए
भेजा कि क्या तुम्हारी आस्था अब भी मज़बूत है या नहीं। मैं आशा
करता हूँ कि बहकाने में माहिर शैतान ने तुम्हें बहकावे में न डाला हो
और जो मेहनत हमने तुम्हारे बीच की थी वह सब बर्बाद न कर दी हो।
6परंतु तिमोथियस ने जो अभी तुम्हारे यहाँ से लौटा है तुम्हारी मज़बूत
आस्था और हमारे लिए तुम्हारे प्रेम के बारे में हमें अच्छी खबर दी है। उसने
यह भी बताया कि तुम्हारे पास हमारी सुखद यादें हैं और तुम हमसे मिलने
के लिए उतने ही बैचेन हो जितने कि हम। 7मेरे भक्त भाइयो और बहनो,
भले ही हमें बहुत सी परेशानियों और ज़ुल्मों का सामना करना पड़ा लेकिन,
तुम्हारी मज़बूत आस्था से हमें प्रेरणा मिलती रही। 8प्रभु येशु में तुम्हारी
गहरी भक्ति को देखकर हम नए जोश से भर गए हैं। 9तुमने जो खुशी हमें
दी है, उसके लिए हम किस तरह परमात्मा को धन्यवाद दें! 10हम दिन-रात
यही प्रार्थना करते हैं कि हम तुमको दोबारा देख सकें और यदि तुम्हारी
आस्था में कोई कमी है, तो हम उसे मजबूत करने में तुम्हारी मदद करें।
11हमारे पिता परमात्मा और हमारे प्रभु येशु हमें जल्दी ही तुमसे मिलाए।
12जैसे हम तुमसे प्रेम करते हैं, वैसे ही प्रभु करें कि तुम्हारा प्रेम एक-दूसरे के
लिए और सब लोगों के लिए भी बढ़ता जाए 13कि जब हमारे प्रभु येशु अपने
सभी पवित्र सत्संगियों के साथ इस पृथ्वी पर वापस आएँगे, और जब
तुम हमारे पिता परमात्मा के सामने खड़े होंगे तो प्रभु येशु तुम्हारे मन को
मज़बूत, निर्दोष और पवित्र बनाएँगे।* सत्य परमात्मा की जय!

---

* **3:13** इस पद का एक और अनुवाद यह भी है, "और जब हमारे प्रभु येशु अपने सारे पवित्र स्वर्गदूतों के साथ सब लोगों के अच्छे और बुरे कर्मों का न्याय करने पृथ्वी पर वापस आएँगे, तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह तुम्हारे मनों को पिता परमात्मा की नज़र में पवित्र और निर्दोष बनाएँ।"

# 4

## हर दिन का जीवन जीने की शिक्षाएँ

[1]भक्त भाइयो और बहनो, मेरे पत्र की आखिरी बात यह है कि
तुमने हमसे उन बातों को करना सीख लिया है जिनसे परमात्मा खुश
होते हैं, और हमने देखा है कि तुम ऐसा कर भी रहे हो। तुम प्रभु येशु
के भक्त हो, इसलिए हमारा तुमसे यह निवेदन है कि तुम परमात्मा
को खुश करने के मार्ग पर तरक्की करते जाओ। [2]तुम जानते हो कि
हमने प्रभु येशु की ओर से तुम्हें क्या सिखाया था। [3]परमात्मा की इच्छा
है कि तुम पवित्र बने रहो और यौन पाप से दूर रहो। [4]तुममें से हर एक
को अपने शरीर को पवित्रता और सम्मानीय तरीके से काबू में करना
सीखना चाहिए। [5]वासनाओं से भरी इच्छाओं के गुलाम मत बनो और
उन लोगों की तरह जीवन मत जिओ जिनका परमात्मा से कोई वास्ता
नहीं। [6]हम तुम्हें पहले ही गंभीर चेतावनी दे चुके हैं कि तुम्हें किसी भी
व्यक्ति के विरुद्ध पाप नहीं करना चाहिए और न ही उसकी पत्नी या
बेटी के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखना चाहिए। अगर कोई ऐसा करेगा
तो प्रभु उसे सज़ा देंगे। [7]परमात्मा ने अपवित्र जीवन बिताने के लिए हमें
नहीं बुलाया है, परंतु पवित्रता के लिए बुलाया है। [8]इसलिए यदि तुम
वासना और यौन पाप के बारे में इन चेतावनियों का पालन नहीं करते
हो, तो वास्तव में तुम सिर्फ हमारी बातों का तिरस्कार नहीं कर रहे हो,
परंतु तुम परमात्मा की आज्ञा का तिरिस्कार भी कर रहे हो, जिन्होंने
तुम्हें अपनी पवित्र आत्मा दिया है।

[9]अब भाइयो और बहनो, हमें प्रेम के बारे में तुम्हें कुछ और लिखने
की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि तुमने एक दूसरे से निस्वार्थ प्रेम करना स्वयं
परमात्मा से सीखा है। [10]और सारे मैसेडोनिया प्रदेश के सब भक्त भाइयों
और बहनों के बीच तुम इस प्रेम की खुशबू को फैला रहे हो। तो हमारी
विनती है कि तुम ऐसा और बढ़-चढ़ कर करो। [11]अपने पड़ोसियों के
साथ अच्छे और मीठे सम्बन्ध रखने की पूरी कोशिश करो। अपने काम
पर ध्यान दें और दूसरों के काम में दखल न दें। अपनी रोज़ी रोटी कमाने
के लिए अपनी मेहनत पर भरोसा रखें, जैसा कि हमने आपको सिखाया
है। [12]इसे देख कर जो लोग प्रभु येशु के भक्त नहीं हैं तुम्हारा आदर
सम्मान करेंगे और तुम अपने खर्चों के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहोगे।

### प्रभु येशु से बादलों पर मिलने का अवसर

[13]भक्त भाइयो और बहनो, हम चाहते हैं कि तुम जानो कि उन
येशु-भक्तों के साथ क्या होगा जो मर चुके हैं। हम नहीं चाहते कि तुम
उन लोगों की तरह शोक में खो जाओ जिन्हें मोक्ष मिलने की कोई
आशा नहीं है। [14]उनके समान शोक मत करो, क्योंकि हम मानते हैं कि
प्रभु येशु मर गए और परंतु परमात्मा ने उन्हें जीवित कर दिया। हम
इस बात पर भी विश्वास करते हैं कि परमात्मा येशु-भक्तों को जो मर
चुके हैं जीवित कर, उनका सम्बन्ध प्रभु येशु के साथ फिर से जारी
कर देंगे। [15]हमें प्रभु येशु ने स्वयं यह बताया है कि हम जो अभी भी
जीवित हैं जब वह वापस पृथ्वी पर आएँगे तो वह पहले हमसे नहीं
मिलेंगे। वे उन भक्तों से सबसे पहले मिलेंगे जो मर चुके हैं। [16]तो प्रभु
येशु स्वयं परमस्वर्ग से उतरेंगे और ऊँची आवाज़ में संकेत देंगे। तब
मुख्य स्वर्गदूतों में से एक परमात्मा का बिगुल फूँकने की आज्ञा देगा।
फिर सबसे पहले परमात्मा मुक्तिदाता के उन भक्तों को जो मर चुके
हैं फिर से जीवित कर देंगे। [17]उसके बाद, हम भक्तों में से जो उस
समय जीवित होंगे उन्हें जीवित ही बादलों पर उठा लिया जाएगा कि
वे आकाश में प्रभु येशु से मिलें। तब हम हमेशा प्रभु येशु के साथ रहेंगे।
[18]इसलिए जो मैंने अभी-अभी कहा है, उसे एक-दूसरे को याद दिलाकर
लगातार एक-दूसरे को प्रेरणा देते रहो।

## 5

### प्रभु येशु वापस पृथ्वी पर आएँगे, इसलिए तैयार रहो

[1]भक्त भाइयो और बहनो, यह ज़रूरी नहीं है कि हम लिखें और
तुमको उस समय और तारिख के बारे में बताएँ जब प्रभु येशु वापस
पृथ्वी पर आएँगे। [2]तुम अच्छी तरह से जानते हो कि कोई नहीं जानता
कि वह कब वापस आएँगे। जैसे लोग सो रहे होते हैं और नहीं जानते
कि कब चोर उन्हें लूटने आएगा, ऐसे ही तुम नहीं जान सकते कि
प्रभु येशु कब लौटेंगे। [3]लोग कह रहे होंगे, “सब ठीक है, कहीं से
कोई खतरा नहीं है।” उसी समय अचानक विनाश शुरू हो जाएगा
जैसा गर्भवती स्त्री को अचानक प्रसव-वेदना शुरू हो जाती है। तब
विनाश से बचने का कोई रास्ता नहीं मिलेगा। [4]परंतु भक्त भाइयो और

बहनो, तुम पाप और अज्ञानता के अंधकार में नहीं हो। इसलिए, जब
प्रभु अचानक लौटेंगे* तो तुम पहले से ही तैयार हो तो नष्ट नहीं होंगे।
[5]तुम सभी परमात्मा के प्रकाश और दिन के लोग हो। हम येशु-भक्त हैं
और अज्ञानता की रात या पाप के अंधकार के नहीं हैं। [6]इसलिए हम
दूसरे लोगों की तरह सोते न रहें, बल्कि सतर्क रहें और शराब से दूर
रहें। [7]क्योंकि रात होने पर लोग सोते हैं और अनजान होते हैं कि क्या
होने वाला है, और रात में लोग शराब पीकर मदहोश होते हैं। [8]किंतु
हम परमात्मा के प्रकाश में रहने वाले लोग हैं, इसलिए हम नशे में
नहीं पड़ेंगे। हम प्रभु येशु पर आस्था रख के और दूसरों से प्यार करके
सुरक्षित हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक सैनिक अपनी छाती पर कवच
पहनकर खुद की रक्षा करता है। प्रभु येशु हमें मुक्ति देंगे, और यह
मज़बूत आशा हमारी रक्षा करेगी जैसे एक हेलमेट एक सैनिक की रक्षा
करता है। [9]क्योंकि परमात्मा हमें अपना क्रोध और न्याय प्रकट करने
के लिए नहीं, बल्कि हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु के माध्यम से मुक्ति
प्राप्त करने के लिए चुना है। [10]मुक्तिदाता हमारे लिए मरे ताकि जब वह
पृथ्वी पर लौटें तो चाहे हमारी मृत्यु हो गई हो या हम जीवित हों, हम
हमेशा उनके साथ जीवित रहेंगे। [11]इसलिए एक-दूसरे को हौसला दो
और मदद करो, जैसा कि तुम कर भी रहे हो।

## जीवन की ज़रूरी शिक्षाएँ

[12]प्रिय भाई बहनो, तुमसे हमारी विनती है कि तुम उनकी सराहना
करो, जो तुम्हारे लिए लगन से मेहनत कर रहे हैं और तुम्हें शिक्षा देते
हैं. प्रभु ने उनपर तुम्हारी ज़िम्मेदारी सौंपी हैं। [13]जो कुछ वे तुम्हारे लिए
कर रहे हैं, उसके लिए उनको प्रेम करो और सम्मान दो। आपस में
मेल से रहो। [14]भक्त भाइयो और बहनो, हमारी तुमसे विनती है कि जो
कोई अपने काम में सुस्ती दिखाते हैं, उन्हें समझाओ, जो निराश हैं
उन्हें हौसला दो, जो किसी भी तरीके से कमज़ोर हैं उन्हें सँभालो और
सबके साथ सबर से रहो। [15]ध्यान रखो, बुराई के बदले कोई किसी
के साथ बुराई न करे, परंतु तुम आपस में और सबके साथ हमेशा

---

* **5:4** *अचानक लौटेंगे* - या, "वह चोर की तरह अचानक आ जाएँगे"

भलाई करने की कोशिश करो। [16]हमेशा खुश रहो। [17]परमात्मा से मन में
हमेशा प्रार्थना करते रहो। [18]तुम हर स्थिति में परमात्मा को धन्यवाद
हो। मुक्तिदाता येशु के भक्त होने के नाते परमात्मा तुमसे यही चाहते
हैं। [19]पवित्र आत्मा को काम करने से मत रोकना। [20]दिव्य संदेशों का
अनादर मत करो। [21]परंतु उन सब संदेशों को जाँचो-परखो, और जो
संदेश तुम्हारी जाँच-परख से सही निकलते हैं उन्हें स्वीकार करो।
[22]किसी भी प्रकार की बुराई से कोई नाता मत रखो।

[23]शांतिदाता परमात्मा स्वयं तुमको पूरी तरह से पवित्र करें और
तुम्हारी आत्मा, प्राण और शरीर को हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु के
पृथ्वी पर वापस आने तक पाप के दाग से बचाए रखें। [24]परमात्मा ऐसा
ज़रूर करेंगे क्योंकि उन्होंने तुम्हें चुना है और उन पर तुम पूरा भरोसा
कर सकते हो।

[25]भक्त भाइयो और बहनो, हमारे लिए भी प्रार्थना करो।

[26]सब भाइयो और बहनो को प्रेम से भरा नमस्कार करो। [27]प्रभु येशु
का भक्त होने के नाते, मैं तुमको यह आदेश देता हूँ कि यह पत्र सब
भक्त भाइयों और बहनों को पढ़कर सुना देना।

[28]हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु की कृपा तुम पर बनी रहे।